एकाधिकार (Monopoly)

MONO — एक

POLY — विक्रेता

ऐसा बाजार जिसमे केवल एक ही विक्रेता होता है

एकाधिकार से हमारा आशय बाजार की उस परिस्थिति से है जिसमें एक विशिष्ट वस्तु की पूर्ति पर किसी एक उत्पादक अथवा फर्म का पूर्ण नियंत्रण रहता है

- बाजार में एक ही उत्पादक या फर्म रहती है इसीलिए एकाधिकार की स्थिति में फर्म और उद्योग पर्यायवाची होते हैं
- फर्म ही उद्योग उद्योग ही फर्म होता है
- इस बाजार में कोई भी निकट प्रतिस्थापक बस्तु नहीं होती है अतः वस्तु की कीमत पर किसी भी प्रकार का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता

एकाधिकार की परिभाषाएं

प्रो. थॉमस के अनुसार,

"विस्तृत अर्थ से एकाधिकार शब्द वस्तुओं अथवा सेवाओं के किसी भी प्रभावपूर्ण कीमत में नियंत्रण को व्यक्त करता है चाहे वह मांग का हो अत वह पूर्ति का किंतु संकुचित अर्थ में इसका आशय उत्पादन तथा विक्रेताओं के ऐसे संघ से होता है जो कि वस्तुओं अथवा सेवाओं की पूर्ति कीमत को नियंत्रित करके करता है।"

लर्नर के अनुसार

एकाधिकारी का अभिप्राय इस विक्रेता से है जिसकी वस्तु का मांग वक्र गिरता हुआ होता है

प्रो. बेनहम के अनुसार

एकाधिकारी एक विक्रेता होता है और एकाधिकार शक्ति के सम्पूर्णता नियंत्रण पर आधारित होता है

एकाधिकार की विशेषताएँ

- फर्म एवं उद्योग एक दूसरे के पर्यायवाची
- प्रभावपूर्ण निकट प्रतिस्थापन वस्तुओं का अभाव
- औसत आय और सीमांत आय वक्र दाई से नीचे की ओर ढालू होना
- नई फर्मो के प्रवेश पर पूर्णतः रोक
- स्वतंत्रता कीमत नीति
- कीमत विभेद संभव है
- बेलोचदार मांग
- वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण
- दीर्घकाल में असामान्य लाभ भी प्राप्त

एकाधिकार का वर्गीकरण

व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक एकाधिकार

व्यक्तिगत एकाधिकारी वह है जिसमें फर्म का स्वामित्व व्यक्तिगत सहासी या संगठन के आधार पर होता है जिसका प्रथम उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है

जबकि सार्वजनिक एकाधिकार वह है जिसमें स्वामित्व सरकार या सार्वजनिक संस्थानों का होता है और इनका उद्देश्य सामाजिक कल्याण में वृद्धि करना होता है

साधारण व विवेचनात्मक एकाधिकार

साधारण एकाधिकार उसे कहते हैं जब एकाधिकार अपनी वस्तु के लिए विभिन्न उपभोक्ताओं से एक ही कीमत वसूल करता है

विवेचनात्मक एकाधिकार के अंतर्गत अधिकारी एक ही वस्तु के लिए विभिन्न उपभोक्ताओं से भिन्न भिन्न कीमत वसूल करता है

पूर्ण या शुद्ध तथा अपूर्ण एकाधिकार

शुद्ध एकाधिकार उसे कहते हैं जिसमें एकाधिकारी को नई फर्मो का उद्योग में प्रवेश करने का डर नहीं होता अर्थात जिसमें स्पर्धा का तत्व लेशमात्र भी नहीं पाया जाता

जबकि पूर्ण एकाधिकार उसे कहते हैं जिससे नई फर्मो के प्रवेश सरकारी नियंत्रण आदि का भय बना रहता है

एकाधिकार की उत्पत्ति के कारण

- कच्चे माल का केंद्रीकरण
- कानूनी एकाधिकार
- अत्यधिक पूंजी विनियोजन
- व्यापारिक लाभ
- गला घोंट प्रतियोगिता
- पेटेंट अधिकार
- सार्वजनिक हितों की रक्षा
- आयात - निर्यात कर नीति

एकाधिकार के लिए समाधान अथवा एकाधिकारी का नियंत्रण

प्रो. पीगू ने एकाधिकार की संस्थाओं को नियंत्रित करने की दो रीतियां बताई है:

परोक्ष विधियां तथा **प्रत्यक्ष विधियां**

परोक्ष विधियां

इसके अंतर्गत भी उपाय सम्मिलित हैं जिनसे एकाधिकार की शोषण शक्ति को परोक्ष रूप से कम करने का प्रयत्न किया जाता है

एकाधिकारी निश्चय तथा एकाधिकार को नष्ट करना

एकाधिकारी कानून द्वारा एकाधिकार संघों का निर्माण किया जा सकता है अथवा पहले से स्थापित एक अधिकारी को तोड़ने के लिए नियम बनाए जा सकते हैं।

भावी प्रतियोगिता को बनाए रखना

प्रत्यक्ष विधियां

इसके अंतर्गत भी उपाय सम्मिलित हैं जिनके द्वारा राज्य एक अधिकारियों के लिए प्रतियोगिता को जन्म देते हैं अथवा जनता को उसकी बुराइयों का परिचय कराता है-

क्रेता संघ

एकाधिकारी की अनुचित क्रियाओं से अपनी रक्षा के लिए क्रेतागण मिलकर अपना एक संघ बना सकते हैं।

एकाधिकार की कुरीतियों का प्रचार प्रसार करना

मूल्य अथवा उत्पादन पर नियंत्रण करना

सरकार एक रेट या मूल्य ट्रिब्यूनल नियुक्त कर उनके सुझावों के अनुसार उचित कीमत निर्धारित कर सकती है

सार्वजनिक स्वामित्व

यदि एकाधिकारी उद्योग देश के हित के लिए आवश्यक है किंतु साथ ही एकाधिकारी स्थिति का समाप्त करना भी लाभदायक हो तो उस उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिए और उसका संचालन सरकारी उपक्रम के रूप में किया जाना चाहिए

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE & SHARE

The Video

And

SUBSCRBE

YouTube CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com